शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भीष्म साहनी के उपन्यासों में सामाजिक जीवन दर्शन
(नीलू नीलिमा नीलोफर के विशेष संदर्भ में)

डॉ.दिलीप कुमार झा
फोर्ड क्लस्टर विद्यालय,
हावड़ा, पश्चिम बंगाल, भारत

शोध संक्षेप

भीष्म साहनी हिन्दी कथा की प्रगतिशील परंपरा के शक्तिशाली हस्ताक्षर हैं। भीष्म साहिनी की लंबी रचना यात्रा मे उनके उपन्यास अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। उपन्यासकार के रूप में उनका साहित्यिक प्रदेय न सिर्फ हिन्दी में अपितु भारतीय भाषाओं के साहित्य में अपना विशेष स्थान रखता है। भीष्म साहनी की उपन्यास यात्रा 'झरोखे' से लेकर 'नीलू नीलिमा नीलोफर' तक फैली हुई है। जिसमें उन्होंने 'झरोखे' (1967), 'झंडियां, (1970), 'तमस' (1973), 'बसंती' (1980), 'मय्यादास की माड़ी' (1988), 'कुंतो' (1993) तथा 'नीलू नीलिमा नीलोफर' सात उपन्यास दिए हैं।"1 प्रस्तुत शोध पत्र में भीष्म साहनी के उपन्यासों में अभिव्यक्त सामाजिक जीवन दर्शन पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

यदि साहित्य समाज का दर्पण है तो उपन्यास साहित्य जीवन दर्शन का दर्पण है। जीवन दर्शन साहित्यकार के जीवन की आलोचना है। डॉ.आदर्श सक्सेना के अनुसार, "जीवन दर्शन से अभिप्राय है जीवन संबंधी दृष्टिकोण।' इस अर्थ में जीवन दर्शन या कलाकार का जीवन एक विशिष्ट सत्य की ओर संकेत करता है। वह सत्य है कलाकार के जीवन को कैसा पाया, उसके संबंध में क्या धारणा बनाई और जीवन को कैसा समझता है। संक्षेप में जीवन दर्शन कलाकार के जीवन की आलोचना है।"2

आधुनिक हिंदी कथा की प्रगतिशील परंपरा में सामाजिक उपन्यासों का महत्वपूर्ण स्थान है। सामाजिक उपन्यासों में सामाजिक जीवन की समस्याओं एवं विचारधाराओं की अभिव्यक्ति की जाती है। इसमें जीवन दर्शनपरक विशेषताएं सम्मिलित की जाती हैं। अतः सामाजिक जीवन दर्शन से तात्पर्य है जीवन का विवेचन विश्लेषण, सामाजिक दृष्टि से करना।" सामाजिक जीवन दर्शन के अंतर्गत समाज के विभिन्न पहलुओं, उनकी मान्यताओं, रीति रिवाजों विभिन्न समस्याओं समाज की आर्थिक विषमताओं आदि पर लेखक के विचारों और दृष्टिकोण समाहित रहते हैं। सामाजिक जीवन दर्शन के अंतर्गत आध्यात्मिक और भौतिक दृष्टिकोण से समाज की समस्याओं पर विचार किया जाता है।

'समाज केंद्रित उपन्यास की दो कोटियां हैं। इन्हें हम सामाजिक और समाजवादी उपन्यास कह सकते हैं। सामाजिक उपन्यासों में सामाजिक जीवन का चित्रण रहता है किंतु उसे देखने की लेखक की कोई संस्थागत निर्दिष्ट दृष्टि नहीं रहती। यानी दृष्टि तो होती है किंतु वह किसी प्रकार की हो सकती है - लेखक की अपनी भी हो सकती है और किसी संस्था की भी। किंतु समाजवादी उपन्यासों की एक निर्दिष्ट दृष्टि होती है। वह दृष्टि लेखक की अपनी निजी दृष्टि नहीं हो सकती, यह मार्क्सवादी होती है अर्थात मार्क्स

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

ने सामाजिक यथार्थ का जो विश्लेषण किया है, उसे ये उपन्यास नहीं छोड़ सकते। वास्तव में समाज जैसा दीखता है वैसा है नहीं। इनके अनुसार सही रूप को देखने के लिए, उसके सत्यों का विश्लेषण करने के लिए एक दृष्टि चाहिए और वह दृष्टि मार्क्सवादी ही हो सकती है।"3

समाजवादी उपन्यासों की दृष्टि मार्क्सवादी है और विषय सामाजिक जीवन है। इसका यथार्थ सामाजिक यथार्थ है। "आर्थिक साधनों के बदलने से समाज के संबंध बदलते हैं और समाज के संबंधों के बदलने से समाज की समता, संस्कृति, कला और साहित्य में नवीनता आती है। समाजवादी उपन्यासकारों ने इसी दृष्टिकोण से समाज के यथार्थ को चित्रित किया है।"4

नीलू नीलिमा नीलोफर में सामजिक जीवन दर्शन

सामाजिक जीवन दर्शन संबंधी दृष्टिकोण साहित्य के अंतर्गत विशिष्ट जीवन दर्शन के रूप में व्यवहृत हुआ है। समाजवादी उपन्यासों में प्रेमतत्व का गंभीर प्रभाव दिखाई पड़ता है। "प्रेम के क्षेत्र में पुरुष और नारी की स्वतंत्रता का समर्थन करते हुए समाजवादी उपन्यासकारों ने प्रेम को भी अन्य जीवन तत्वों के समान ही द्वंद्वात्मक माना है और उसे अंततः जीवन की सिद्धि का प्रेरक सोपान स्वीकार किया है।

भीष्म साहनी के उपन्यासों में प्रेम, विवाह और जीवन संबंधी दृष्टिकोण को समाजवादी विचारों के आधार पर देखा गया है। भीष्म साहनी के प्रायः सभी उपन्यासों में प्रेम तत्व की सृष्टि हुई है। प्रेम अपने विभिन्न रूपों में प्रकट हुआ है। प्रेमी-प्रेमिका, पति-पत्नी और पति, प्रेमिका एवं पत्नी के बीच त्रिकोणीय प्रेम का भी संचार हुआ है।

भीष्म साहनी ने 'नीलू नीलिमा नीलोफर' उपन्यास में नीलोफर और नीलिमा के बहाने दो प्रेम ट्रेजडियों को व्यक्त किया है। नीलोफर जो मुस्लिम परिवार की लड़की है, वह सुधीर नामक हिंदू लड़के से प्रेम करती है। जबकि नीलिमा जो हिंदू परिवार की लड़की है वह मुस्लिम परिवार के लड़के अलताफ से प्रेम करती है। पर दोनों लड़कियों को अपना जीवन साथी चुनने की स्वतंत्रता नहीं है। हांलाकि नीलोफर और सुधीर कोर्ट मैरिज करके शिमला भाग जाते हैं, लेकिन नीलोफर का भाई हमीद पूरे उपन्यास में उसका पीछा करता है। इधर नीलिमा अल्ताफ को चाहते हुए भी अपनी दादी और डैडी की खुशी के खातिर अचानक सुबोध से विवाह करके जैसे प्रेम का गला घोंटती है।"6

भीष्म साहनी के सामाजिक जीवन दर्शन में निम्नलिखित बिंदुओं को रेखांकित किया जा सकता है :

1 विवाह अनिवार्य है : भीष्म साहनी ने अपने उपन्यासों में यह जीवन दर्शन अभिव्यक्त किया है कि स्त्री-पुरुष के सहजीवन के लिए विवाह अनिवार्य है। 'बसंती' उपन्यास में बंसती दीनू के साथ भाग जाती है, किंतु विवाह की रस्म अदा करती है। "जंतरी से फाड़ी हुई तस्वीर के सामने दोनों एक-दूसरे का हाथ पकड़कर खड़े हुए थे कि बसंती ने उसके बालों में फूल खोंसा था, कि उसने भी बसंती के बालों में फूल टांका था, कि उसने बसंती के बालों में लाल पेंसिल से रंग भरा था, बसंती ने सब कुछ बता दिया और यह भी आसमान में चांद खिला था और दोनों ने छिटकी चांदनी में विवाह की शपथ ली थी।"7

'नीलू नीलिमा निलोफर' उपन्यास में भी नीलिमा और सुबोध शादी की बात करते हैं। "घर के अंदर कदम रखते ही सुबोध का हाथ अपने हाथ में

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

पकड़े नीलिमा सीधे अपने डैडी के कमरे में जा पहुंची और छूटते ही बोली, "डैडी, हम एक-दूसरे से शादी करेंगे। हमने फैसला कर लिया है।"8 जब शाम हुई तो हम एक पार्क में थे। इसने कहा, - चलो बीयर पिएं। मैंने कहा - मैं तो ठर्रा पियूंगी। फिर हमने एक नारियल पिया। तब तक हम फैसला कर लिया था कि हम एक-दूसरे के साथ शादी बनाएंगे। यह मेरे साथ शादी मनाएगा मैं इसके साथ शादी मनाऊंगी।"9

2 प्रेम स्वाभाविक या प्राकृतिक प्रक्रिया : भीष्म साहनी प्रेम को स्वाभाविक या प्राकृतिक प्रक्रिया मानते हैं। प्रेम का तो नया अनुभव है। न यह समस्या है और न नयी स्थिति है। सहस्रों वर्षों से ऐसा होता आया है। यह प्रेम की स्वाभाविकता के कारण होता है। बंसती उपन्यास में बसंती और दीनू का तथा नीलू नीलिमा नीलोफर में नीलोफर और सुधीर का आकर्षण स्वाभाविक है।

3 अनमेल विवाह : नीलू नीलिमा नीलोफर उपन्यास में भीष्म साहनी ने बेमेल विवाह की ट्रेजेडी को व्यंजित किया है। नीलिमा बड़े बाप की बेटी ठहरी, जो बेहद खुले परिवेश की अभ्यस्त थी। वह अल्ताफ से प्रेम करती थी। उसी से वह विवाह के सपने देख रही थी। पर डैडी और दादी की खातिर वह प्रेम का गला घोंटकर सुबोध से विवाह करने का फैसला ले लेती है। वह सुबोध के साथ एक नया जीवन शुरू करना चाहती है, परंतु दोनों के संस्कार और रुचियां भिन्न थीं, दोनों की जीवन शैली अलग थी। इस कारण दोनों एडजस्ट नहीं कर पाते। सुबोध अपनी पत्नी नीलिमा को रुमाल की तरह इस्तेमाल करता है जबकि नीलिमा उसे बेहद प्यार करती है, पर घर में उसकी अहमियत बीयर की बोतल से ज्यादा नहीं है।"10 वह अपने पति द्वारा प्रताड़ित होती है। वह प्रायः पिटती रहती है। नीलिमा जीवन में अपनी नियति बूचड़खाने की उस मुर्गी में ढूंढने लगती है जिसकी अंतिम परिणति है हलाल होना, "मृत्यु में कितनी शांति है सारी छटपटाहट समाप्त हो जाती है।"11 नीलिमा जिंदगी के अंधेरे बंद कमरे में चीख रही है ''मुझे ढूंढ लो। देखें मैं कहा हूं। मुझे ढूंढ लो।"12

4 प्रेम: वैवाहिक सुख का आधार : भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास नीलू नीलिमा नीलोफर में यह जीवन दर्शन अभिव्यक्त किया है कि मानव के वैवाहिक सुख का आधार प्रेम है न कि कोई धर्म या संप्रदाय। "सुधीर का विद्यार्थी नीलू नीलोफर मुस्लिम लड़की से प्रेम और फिर विवाह तथा नीलू के घरवालों द्वारा उस पर किए गए अत्याचार यह व्यंजित करते हैं कि मानव जीवन के वैववाहिक सुख का आधार प्रेम है न कि कोई धर्म संप्रदाय।"13 नीलू के भाई हामीद की कारगुजारियों से डरा सुधीर जब दीन कबूल कर लेने के लिए तैयार हो जाता है तो नीलू उसे यह कहकर चौंका देती है कि धर्म परिवर्तन की शर्त उनके प्यार में कहीं निहित नहीं थी और प्रेम की ताकत भी मुखर होती है। जब सुधीर और नीलू तय कर लेते हैं कि कुछ भी हो वे अपने प्रेम के बल पर जीवन की सब बाधाएं लांघ लेंगे। "अंधेरी कोठरी में एक-दूसरे के साथ सटकर बैठे, एक-दूसरे में खोए, नीलू और सुधीर फिर से अपनी भावी योजनाओं का ताना-बाना बुनने लगे थे। हर नए मंसूबे पर उनके प्रेम की आभा छिटकी थी। प्रेम यथार्थ जीवन में पड़ने वाले अवरोधों की चिंता कर ही नही सकता। उन्हें यह अटूट विश्वास था कि वे अपने प्रेम के बल पर बीहड़ से बीहड़ वास्तविकता पर भी काबू पा लेंगे।"14

निष्कर्ष

भीष्म साहनी के सामाजिक जीवन दर्शन का सार तत्व यह है कि उन्होंने जीवन को सामाजिक

दृष्टि से देखा है। उसका विवेचन-विश्लेषण समाज को दृष्टि में रखकर किया है। उन्होंने विवाह के संबंध में प्रगतिशील दृष्टिकोण को महत्व दिया है। विवाह को भौतिक परिवर्तनशील और जीवन की सहायक वस्तु के रूप में स्वीकार किया है। उन्होंने यह जीवन दर्शन अभिव्यक्त किया है कि यदि पति-पत्नी के मध्य समानता का रिश्ता हो तभी जीवन सुखद हो सकता है। उन्होंने प्रेम को सहज प्रक्रिया माना है तथा उसे जीवन की महत्वपूर्ण उपलब्धि स्वीकार किया है। उन्होंने प्रेम और विवाह के क्षेत्र में रूढ़िवादी प्राचीन मान्यताओं का विरोध किया है। अपने उपन्यास नीलू, नीलिमा, नीलोफर में यह जीवन दर्शन अभिव्यक्त किया है कि मानव के वैवाहिक सुख का आधार प्रेम है न कि कोई धर्म या संप्रदाय। अपनी नवीन समाजवादी जीवन दृष्टि के कारण भीष्म साहनी समाजवादी उपन्यासकारों की श्रेणी में प्रथम पंक्ति में खड़े दिखाई देते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1 पल प्रतिपल, संपादक देश निर्मोही, मार्च-जून, 2001, पृष्ठ 32, पंचकूला, हरियाणा

2 हिन्दी के आंचालिक उपन्यास और शिल्प विधि, डा॰आदर्श सक्सेना, पृष्ठ 233-234

3 हिन्दी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, रामदरश मिश्र, तीसरा परिवर्द्धित संस्करण 2001, पृष्ठ 126

4 वही, पृष्ठ 130

5 आलोचना 48, नई दिल्ली, पृष्ठ 85

6 पल प्रतिपल, संपादक देश निर्मोही, मार्च-जून, 2001, पृष्ठ 156, पंचकूला, हरियाणा

7 बसंती, भीष्म साहनी, संस्करण 1980, 1993, पृष्ठ 84, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, दिल्ली

8 नीलू नीलिमा नीलोफर, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 102

9 वही पृष्ठ 103

10 पल प्रतिपल, संपादक देश निर्मोही, मार्च-जून, 2001, पृष्ठ 157, पंचकूला, हरियाणा

11 नीलू नीलिमा नीलोफर, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 171

12 नीलू नीलिमा नीलोफर, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 186

13 पल प्रतिपल, संपादक देश निर्मोही, मार्च-जून, 2001, पृष्ठ 158, पंचकूला, हरियाणा

14 नीलू नीलिमा नीलोफर, भीष्म साहनी, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, पृष्ठ 168